# भगवान बुद्ध के महाश्रावक
# आयुष्मान अनुरुद्ध

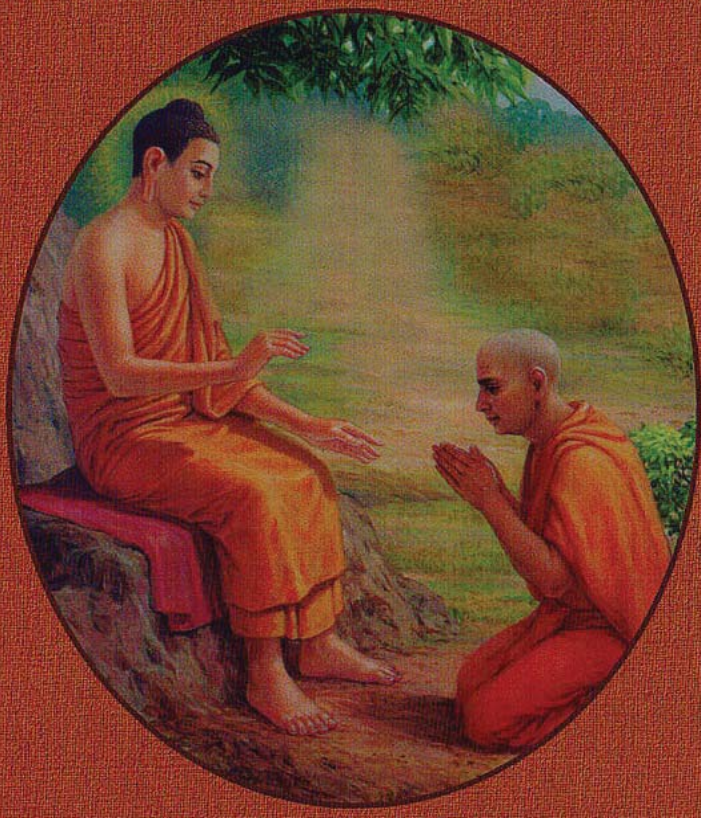

विपश्यना विशोधन विन्यास

भगवान बुद्ध के महाश्रावक

# आयुष्मान अनुरुद्ध

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

# भगवान बुद्ध की उद्‌घोषणा

**********

**"एतदग्गं, भिक्खवे, मम सावकानं भिक्खूनं**
**दिब्बचक्खुकानं यदिदं अनुरुद्धो।"**

-अङ्गुत्तरनिकाय (१.१.१९२)

"भिक्षुओ, मेरे भिक्षु-श्रावकों में –
दिव्यचक्षु वालों में अग्र है अनुरुद्ध।"

**********

# आयुष्मान अनुरुद्ध

## विषयानुक्रमणिका


प्रकाशकीय [vii]

**अनुरुद्ध .....१**

अनुरुद्ध का जन्म . . . . . १
'नहीं है' का रहस्य . . . . . १
गृहस्थी का जंजाल. . . . . २
प्रव्रज्या की सशर्त अनुमति . . . . . ४
प्रव्रज्या-ग्रहण . . . . . ४

**निर्वाण-पथ पर अग्रसर.....६**

चित्त के उपक्लेशों से मुक्ति. . . . . ६
अनुरुद्ध की कठिनाई का निवारण. . . . . ७
आठ महापुरुष-वितर्क पर विचार करने के फल . . . ८

**स्मृतिप्रस्थानों की भावना का माहात्म्य .....१२**

शैक्ष्य भिक्षु स्मृतिप्रस्थानों की भावना करें . . . . १२
अशैक्ष्य भिक्षु स्मृतिप्रस्थानों की भावना करें. . . . १३
स्मृतिप्रस्थानों की भावना के लाभ. . . . . १४
स्मृतिप्रस्थानों की भावना से महाभिज्ञाओं की प्राप्ति . १६
तृष्णा का क्षय . . . . . १७
स्मृतिप्रस्थान अभ्यासी का गृहस्थी में लौटना असंभव. १७
चित्त शारीरिक वेदनाओं से अप्रभावित . . . . . १९
अनुरुद्ध की प्रशंसा . . . . . २०

**गुण-संपन्न आयुष्मान अनुरुद्ध .....२१**

अनुरुद्ध की पहचान . . . . . २१
सालवन का आत्यंतिक वर्णन . . . . . २२
श्रावक-संग परस्पर प्रेमभाव . . . . . २३

पञ्चकङ्ग स्थपति की शंका का निवारण . . . . . २५
ब्राह्मणकारक धर्म 'साधना' . . . . . २६
बक ब्रह्मा की मिथ्या-दृष्टि का उन्मूलन . . . . . २६

**विविध प्रकरण .....२८**

संस्कारों की अनित्यता . . . . . २८
पुनर्जन्म कथन के उद्देश्य . . . . . २९
पिशाच-योनि से मुक्ति के उपाय . . . . . २९
पांच बातों से स्त्रियों की सुगति . . . . . ३०
पांच बातों से स्त्रियों की दुर्गति . . . . . ३०

**भगवान की परिनिर्वृत्ति कथा .....३२**

अनुरुद्ध द्वारा शोकाकुल भिक्षुओं को सांत्वना . . . ३३

**अतीत कथा .....३४**

भगवान पदुमुत्तर का शासनकाल . . . . . ३४
भगवान कस्सप का शासनकाल . . . . . ३४
अंतरालः भगवान कस्सप तथा गौतम बुद्ध के
शासन के बीच . . . . . ३५
अन्नभार द्वारा प्रत्येकबुद्ध को दान . . . . . ३५
अन्नभार के पुण्य का उदय . . . . . ३५
भगवान गौतम बुद्ध का शासनकाल . . . . . ३६

# प्रकाशकीय

आयुष्मान अनुरुद्ध की गणना भगवान के अस्सी महाश्रावकों में की गयी है। इन्हें दिव्य-दृष्टि में विशिष्टता प्राप्त थी इसीलिए भगवान ने आयुष्मान अनुरुद्ध को अपने दिव्य-चक्षु प्राप्त श्रावकों में अग्र स्थान पर प्रतिष्ठित किया था। महाराज सुद्धोदन के आवाहन पर शाक्य राजा भद्दिय के साथ जिन पांच शाक्य कुमारों ने प्रव्रज्या ग्रहण की उनमें आयुष्मान अनुरुद्ध भी थे।

अत्यंत लाड़-प्यार में पले होने के कारण आयुष्मान अनुरुद्ध अति कोमल और सुकुमार स्वभाव के थे। बड़े भाई महानाम द्वारा आयुष्मान अनुरुद्ध को प्रव्रज्या के लिए प्रेरित किये जाने पर सर्वप्रथम उन्होंने अनिच्छा जतायी। परंतु भाई महानाम द्वारा गृहस्थी के जंजालों के बारे में जानकारी मिलने पर वह तुरंत ही प्रव्रज्या के लिए तैयार हो गये। मां ने अनुरुद्ध को सशर्त प्रव्रज्या की अनुमति प्रदान की। अनुरुद्ध ने अपनी व्यवहारकुशलता से अपने मित्र राजा भद्दिय के साथ प्रव्रज्या ग्रहण की।

प्रव्रज्या ग्रहण करने के पश्चात अपनी साधना-संबंधी कठिनाई के बारे में आयुष्मान अनुरुद्ध एक बार आयुष्मान सारिपुत्त से मिले और कहा - "आयुष्मान सारिपुत्त! मेरा चित्त एकाग्र और समाहित तो रहता है, फिर भी उपादानरहित होकर आस्रवों से विमुक्त नहीं होता?" तब आयुष्मान सारिपुत्त ने इन्हें मान, औद्धत्य और कौकृत्य - इन तीनों को छोड़कर चित्त को निर्वाण की ओर केंद्रित करने की सलाह दी।

एक समय ध्यान करते समय आयुष्मान अनुरुद्ध के मन में सात महापुरुष-वितर्क उठे। भगवान आयुष्मान अनुरुद्ध के पास गये और इनकी प्रशंसा करते हुए आठवां वितर्क भी बताया।

स्मृतिप्रस्थानों की भावना में आयुष्मान अनुरुद्ध की गहरी पैठ थी। दोनों अग्रश्रावकों के साथ चर्चा में उनके द्वारा पूछे जाने पर कि शैक्ष्य और